सेन्ट कान्हेरी

मुम्बई उपनगरीय क्षेत्रीय कार्यालय की

ई-पत्रिका

मार्च - 2021

सत्यमेव जयते

प्रधान मंत्री
Prime Minister

संदेश

विदेश मंत्रालय व भारतीय दूतावासों और कार्यालयों द्वारा 10 जनवरी 2021 को विश्व हिन्दी दिवस के रूप में मनाए जाने के बारे में जानकर प्रसन्नता हुई।

विश्व पटल पर भारत की मजबूत पहचान के साथ हिन्दी ने निरंतर प्रगति की है, और आज यह विश्व की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में शामिल है।

भारत भूमि अनेक संस्कृतियों, भाषाओं व बोलियों की धरा रही है। यह गर्व का विषय है कि यहां पुष्पित-पल्लवित कला व ज्ञान से संपूर्ण मानवता को लाभ हुआ है। विविधिता में एकता की हमारी परंपरा को हिन्दी भाषा ने सतत् समृद्ध किया है।

हिन्दी भाषा की सहजता इसे विशिष्ट बनाती है। हम दुनिया के किसी भी कोने में हों, जब हमारे कानों में कहीं से हिन्दी के शब्द पड़ते हैं तो एक विशेष स्नेह का भाव हमारे मन में आता है।

तेजी से बदलते विश्व में हिन्दी पारंपरिक के साथ ही डिजिटल माध्यम से अधिकाधिक लोगों तक प्रभावी रूप से पहुंच रही है। कोरोना महामारी के दौरान लोगों तक शीघ्रता से जानकारियां पहुंचानी हों या शिक्षण, प्रशिक्षण, कौशल और व्यवसाय से जुड़े कार्य हों, हिंदी की सरलता और व्यापकता को सभी ने एक नए सिरे से अनुभव किया है।

अपनी भाषा को हम आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाते हुए, इसके अधिकतकम प्रयोग को सुनिश्चित करके इसे आगे बढ़ा सकते हैं। मुझे विश्वास है कि देश-विदेश में रह रहे सभी हिन्दी प्रेमी इसके व्यापक प्रचार-प्रसार और इससे अधिकाधिक लोगों को जोड़ने के लिए लगातार कार्य करते रहेंगे।

विश्व हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में देश-विदेश में आयोजित किए जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों के सफल आयोजन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

(नरेन्द्र मोदी)

नई दिल्ली
पौष 17, शक संवत् 1942
07 जनवरी, 2021

संरक्षक

श्री सुधांशु शेखर
क्षेत्रीय प्रबंधक

मार्गदर्शक

श्री अजय झा
(मुख्य प्रबंधक)
श्री सत्येन्द्र सिंह
(मुख्य प्रबंधक)
श्री उमेश कुमार
(मुख्य प्रबंधक)

परामर्शदाता

श्री रमेशचन्द्र भंडारी
(वरिष्ठ प्रबंधक)
श्री विकास पटेरिया
(वरिष्ठ प्रबंधक)
श्री महेन्द्र पँवार
(वरिष्ठ प्रबंधक)

संपादक

रंजना चौधरी
प्रबंधक - राजभाषा

संपर्क
राजभाषा विभाग
मुंबई उपनगरीय क्षेत्रीय कार्यालय
मेल : hindimsro@centralbank.co.in
दूरभाष : 022- 62531248

विषय -सूची

1. क्षेत्रीय प्रबंधक जी का संदेश 4
2. मुख्य प्रबंधक जी का संदेश 6
3. गुड़ी पाडवा 7
4. काव्य - कुंज 9
5. खाना-खजाना 12
6. कृषि ऋण मेला 14
7. महिला दिवस 15
8. पुरस्कार 18
9. पर्यावरण 19
10. कहानी 25
11. हिन्दी कार्यशाला 27
12. संस्मरण 28
13. मुंबई उपनगरीय क्षेत्रीय कार्यालय - एक नजर. 29

पत्रिका में लिखी गई रचनाओं में व्यक्त विचार स्वयं लेखक के हैं, संपादक मंडल का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं है.

क्षेत्रीय प्रबंधक महोदय का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियों,

मुंबई उपनगरीय क्षेत्रीय कार्यालय की राजभाषा ई-पत्रिका “सेन्ट कान्हेरी” संप्रेषण का एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा मैं आपसे अपने विचार साझा करता हूं.

सर्वप्रथम मैं आप सभी को नव - वर्ष की शुभकामानाएँ प्रेषित करता हूं. साथियो, आप सभी जानते हैं कि वर्तमान दौर प्रतिस्पर्धा एवं संघर्ष का दौर है. इस प्रतिस्पर्धा के दौर में हमें अपना अस्तित्व कायम रख कर हर क्षेत्र में खरा उतरना है. इस के लिए हमें काफी संघर्ष करना है. हमारे बैंक का एक गौरवशाली इतिहास रहा है और आम लोगों के मध्य सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया की एक अलग ही पहचान है. हमारे प्रयास होने चाहिए कि हम अपने उस गौरवशाली इतिहास को पुन: प्राप्त कर हमारे बैंक को सफलता के नये आयाम स्थापित करें. आज हमारे बैंक की जो छवि है उसे कायम रखना है. हमें अपने विभिन्न संगठनात्मक उदेश्यों की शत- प्रतिशत प्राप्ति करने हेतु कोर जमाराशियों में वृद्धि करनी होगी, खुदरा उत्पादों पर जोर देना होगा, ग्राहकों से अच्छे संबंध बनाकर उन्हें बेहतर ग्राहक सेवा प्रदान करनी होगी. एनपीए प्रबंधन तथा ऋण की वसूली पर विशेष जोर देना होगा.

अपनी लाभप्रदता में वृद्धि हेतु हमें अपने व्यावसायिक पार्टनर के व्यवसाय में भी वृद्धि करनी होगी जोकि न केवल हमारे सम्माननीय ग्राहकों के लिए लाभप्रद है अपितु हमारे बैंक की गैर ब्याज आय का भी एक महत्वपूर्ण स्रोत है. यद्यपि हम एनआईडी में अच्छा कार्य कर रहे हैं

तथापि इसमें और वृद्धि की आवश्यकता है. विभिन्न लॉग इन दिवसों पर नामित शाखाओं को इस व्यवसाय के लिए अधिक से अधिक प्रयास करने होंगे.

अपने बैंक को पीसीए से बाहर लाना अभी हमारी प्राथमिक एवं महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है. इसके लिए हमें पूर्ण निष्ठा तथा परिश्रम से कार्य करना होगा. मुझे आशा ही नही अपितु पूर्ण विश्वास है कि समस्त स्टाफ सदस्य उक्त कार्य हेतु अपना योगदान देंगे एवं सभी पैरामीटरों में अपना सौ प्रतिशत देते हुए और भी बेहतर प्रदर्शन करेंगे.

शुभकामनाओं सहित,

सुधांशु शेखर
क्षेत्रीय प्रबंधक

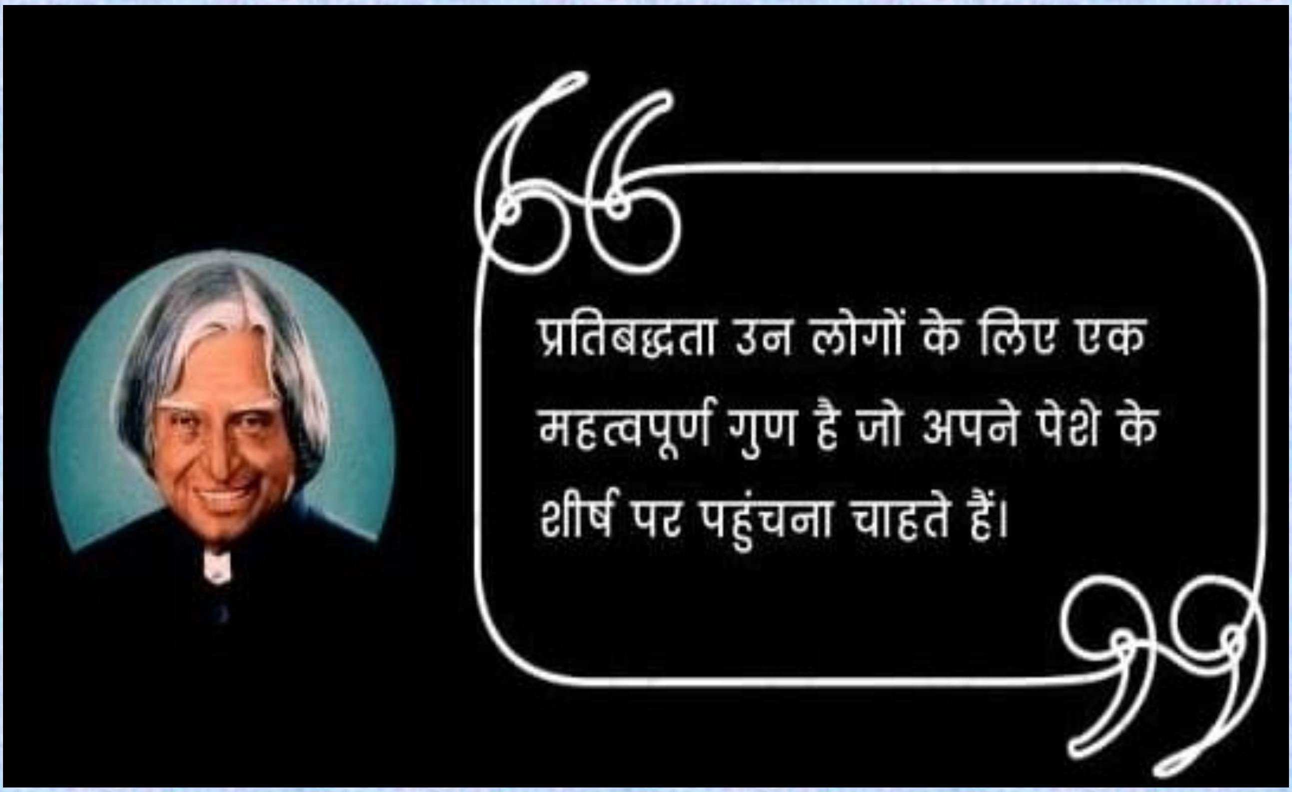

मुख्य प्रबंधक महोदय का संदेश

सभी सेन्ट्रलाइट साथियों,

मुंबई उपनगरीय क्षेत्रीय कार्यालय की राजभाषा ई-पत्रिका "सेन्ट कान्हेरी" के माध्यम से आपसे संवाद करते हुए अपार हर्ष अनुभव कर कर रहा हूँ.

सर्वप्रथम आप सभी को नव - वर्ष की हार्दिक शुभकामानाएँ, आप सभी को पता ही है कि कोरोना त्रासदी ने विश्व अर्थव्यवस्था के साथ-साथ देश की बैंकिंग गतिविधियों को भी बुरी तरह प्रभावित किया है. इस विषम परिस्थिति में भी बैंकर टीम पूरे समर्पण से ग्राहकों को आवश्यक आर्थिक सेवायें प्रदान करती रही है. अब परिस्थितियों में सुधार होकर जनजीवन सामान्य हो रहा है. आर्थिक गतिविधियाँ भी लगभग सामान्य होने लगी है तथा जीवन पटरी पर वापस लौटने लगी है.

साथियों, यह तो आप सभी को पता है कि हम नये दौर में प्रवेश कर चुके हैं. इस बदलते परिवेश में हमें भी अपने बैंक की छवि को बनाये रखना है. यह एक तकनीकी युग है इसलिए हमें अपने साथ साथ ग्राहकों को भी इस बदलते परिवेश से जागरुक करना होगा. जैसे बैंक द्वारा चलाये जा रहे विभिन्न ई-चैनल जिसमें मोबाईल बैंकिंग, डेबिट कार्ड, पीओएस मशिन, ई- टिकटिंग, ई-बिल भुगतान, एसएमएस बैंकिंग, नेट बैंकिंग, नकदी रहित बैंकिग़ आदि शामिल है. इस ई-बैंकिंग को दिनचर्या में शामिल कर हमें ग्राहकों को प्रोत्साहित तथा जागरूक करना है तथा धोखधडी से बचने के उपायों के बारे में भी उन्हें सतर्क करना है. इसके अलावा हम सभी को खुदरा ऋण तथा एमएसएमई ऋणों पर ध्यान केन्द्रित करने अपने व्यवसाय में बढोत्तरी करना है. इसके साथ-साथ अपने चैनल पार्टनर के साथ मिलकर बीमा व्यवसाय को भी बढ़ाना है, जिससे कि हम अधिक से अधिक राजस्व प्राप्त कर सकें.

सभी को स्वस्थ जीवन की शुभकामनाएँ

शुभकामनाओं सहित,

अजय झा
मुख्य प्रबंधक - ऋण
मुंबई उपनगरीय क्षेत्रीय कार्यालय

गुड़ी पाड़वा

(त्यौहार)

सुश्री सुप्रिया कुमारी
प्रबंधक (मासंवि), मुंउक्षेका

चैत्र मास की शुक्ल प्रतिपदा को गुड़ी पाड़वा या उगादि कहा जाता है. इस दिन हिन्दु नव-वर्ष का आरम्भ होता है. गुड़ी यानि “विजय पताका”. आंध्रप्रदेश तथा कर्नाटक में इसे उगादि कहा जाता है एवं महाराष्ट्र में यह पर्व “गुड़ी पाडवा” के रूप में मनाया जाता है. इसी दिन चैत्र नवरात्री का प्रारंभ होता है.

कहा जाता है कि इसी दिन ब्रह्माजी ने सृष्टि का निर्माण किया था. इसमें मुख्यतया ब्रह्माजी और उनके द्वारा निर्मित सृष्टि के प्रमुख देवी-देवताओं, यक्ष-राक्षस, गंधर्व, ऋषि मुनियों, नदियों, पर्वतों, पशु-पक्षियों और कीट-पतंगों का ही नहीं, रोगों और उनके उपचारों तक का भी पूजन किया जाता है. इसी दिन से नया संवत्तार शुरु होता है. अत: इस तिथि को “नवसंवत्सर” भी कहते हैं. चैत्र ही एक ऐसा महीना है, जिसमें वृक्ष तथा लताएँ पल्लवित व पुष्पित होती हैं.

शुक्ल प्रतिपदा का दिन चंद्रमा की कला का प्रथम दिवस माना जाता है. जीवन का मुख्य आधार वनस्पतियों को सोमरस चंद्रमा ही प्रदान करता है. इसे औषधियों और वनस्पतियों का राजा कहा गया है, इसलिए इस दिन को वर्षारम्भ माना जाता है.

आंध्रप्रदेश , कर्नाटक और महाराष्ट्र में सारे घरों को आम के पेड़ की पत्तियों के बंधवार से सजाया जाता है. सुखद जीवन की अभिलाषा के साथ-साथ यह बंधनवार समृद्धि तथा अच्छी फसल में भी परिचालक है. इस अवसर पर आंध्रप्रदेश में घरों में पच्चडी / प्रसादम तीर्थ के रूप में बाटा जाता है. कहा जाता है इसका निराहार सेवन करने से मानव निरोगी बना रहता है . महाराष्ट्र में इस दिन सभी लोग अपने घरों में गुड़ी की स्थापना करते हैं. गुड़ी एक बांस का डंडा होता है जिसे हरे, लाल या पिले कपडे से सजाया जाता है. इस पर नीम और आम के पत्ते बांधे जाते हैं सबसे ऊपर तांबे या चांदी का लोटा बांस पर उल्टा रखा जाता है. फुलों की माला से सजाया जाता है. घर के सामने रंगोली बनाई जाती है. रंगोली के साथ स्वास्तिक का निशान बनाया जाता है. घर के दरवाजों पर आम के पत्तों का तोरण बांधा जाता है.

इस दिन घर में प्रसाद के तौर पर पुरण-पोली बनाई जाती है. इस पर्व में लोग नई चीजें, नए आभूषण, नया घर खरीदने के लिए बेहद शुभ मानते हैं. गुड़ी को लोग भगवान ब्रहमा के झंडे के रूप में देखते हैं.

इस पर्व से कई कहानियाँ जुड़ी है कि शालिवाहन नामक एक कुम्हार के लड़के ने मिट्टी के सैनिकों की सेना बनाई और उस पर पानी छिड़क कर उनकें प्राण डाल दिए और इस सेना की मदद से शक्तिशाली शत्रुओं को पराजित किया. इस विजय के प्रतीक के रूप में शालिवाहन शक का प्रारंभ हुआ. इसी दिन राम भगवान ने भी वानर राजा बाली के अत्याचारी शासन से दक्षिण की प्रजा को मुक्ति दिलाई. बाली के त्रास से मुक्त हुई प्रजा ने घर-घर में उत्सव मनाकर ध्वज फहराएँ. आज भी घर के आंगन में गुड़ी खड़ी करने की प्रथा महाराष्ट्र में प्रचलित है इसलिए इस दिन को गुड़ी पाडवा कहा जाता है.

...... स्त्रोत द्वारा जारी

काव्य-कुंज

प्रदीप कुमार
शाखा प्रबंधक
देवनार शाखा

चंद लम्हे

वो
चंद लम्हे
जब मैं उसे देखता था
आते हुए
आसमान की ओर से
चाँदनी रात में ।

चेहरे पर अज़ब सी आभा
कुछ मुस्कुराहट
कुछ शर्माहट
कुछ कहने की जिज्ञासा
पर थोड़ी सी घबराहट ।

अज़ब सी श्रृंगार की हुई
मनमोहक
झील की कमल सी
निर्मल
वो थी बिल्कुल
परी सी ।

उन्ही चंद लम्हों में
मैं उससे बातें करता था
उसे हँसता था
उसे रुलाता था
कभी रूठ जाती थी जो
तो मैं उसे मानता था ।

उन्ही चंद लम्हों में
मैं उससे कहता था
अपनी खुशियाँ
अपने ग़म
अपनी इच्छाएँ
अपनी अभिलाषायें ।

पर अचानक वो ज़िद करती
जाने की
अपनी दुनिया में
अपने लोगों से मिलने की
रात्रि खत्म होने के साथ ही ।

पर मैं
उसे रोकता, जाने से
मेरी दुनियाँ से दूर
पर वो चली जाती
शायद उसे जाना ही था
क्योंकि ये "चंद लम्हे" ख्वाबों के थे ।

सुश्री श्रुती पाल
सहायक प्रबंधक- परिचालन (मुंउक्षेका)

शांति .....

कितनी अजीब सी ...बात है ....
बीते दिनों की कश्मकश के बाद
आज बेहद शांत ये रात है ...

कितने अरसों बाद ...
आज मेरे मन में कोई हलचल नही...
जैसे आज किसी भी प्रश्न के जवाब की ...
मुझे कोई फिकर नही...

प्रश्न मेरे जैसे ...
सारे मिट गये हो ...
समंदर के बहाव में जैसे ...
रेत के किले सिमट गये हो ...

आज कुछ चाह कर भी ..
मै नहीं सोच पा रही..
कुछ समज कर भी ..
मै नहीं समज पा रही ...

शांति सुकून तो..
हमेशा साथ चलते हैं...
पर पता नहीं क्यों ..
मुझ तक कभी पहुँच नहीं पाते हैं.

मन में उठे सैलाब की ..
अब आदत सी हो गई है...
ये शांत समंदर की शांती ...
आज विचित्र सी लग रही है...

यह स्थिरता मुझे ... अस्थिर कर रही है...
जैसे कई दिनों के कहर के बाद की..
खामोशी याद दिला रही..

रोज जिसकी चाह थी...
आज उसी से घबरा रही...
आज उसका साथ मिलने पर भी..
मै उसी से भाग रही ...

क्यू कुछ मिलने पर..
उसकी कीमत खत्म हो जाती है..
क्यू उससे खोने पर ही ...
उसकी कदर की जाती है...

आज शांत होकर भी
बेचैन हूँ...
सब पाकर भी ...
मै आज रिक्त हूँ ...

शायद जीने की वजह ..
मुझे बताना चाहती है..
ये शांती शायद उस के बाद आने वाले..
तुफान की मुझे खबर देना चाहती है...

की उठो..
अब भी बहुत लम्बा सफर है..
थकना अब विकल्प नहीं..
मेरी तलाश करना यही तुम्हारा .. अस्तित्व है...

बता रही मुझे वह..
बडी अजीब हूँ मै ...
बहुत मंथन के बाद मीलु
ऐसी चीज हूँ मै...

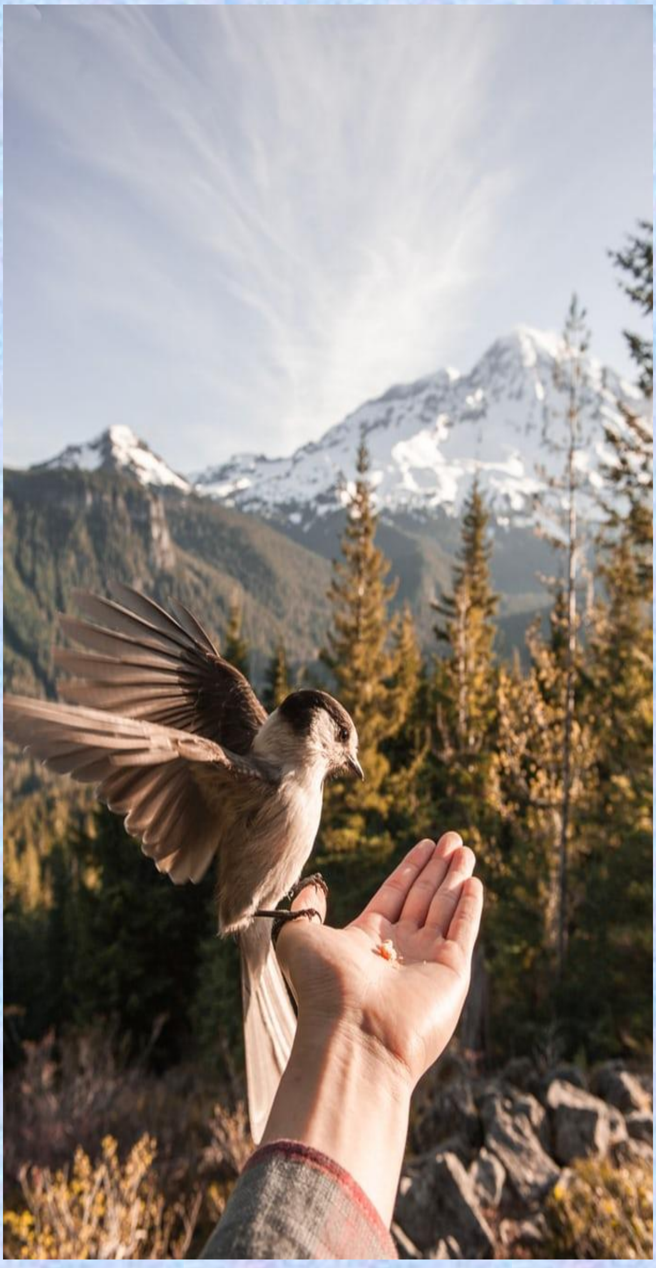

तुम्हे गुमराह कर दूँ..
खुद से मै तुम्हे तबाह कर दूँ..
तुम जब हार मान जाओ...
तब मै तुम्हारे पास आ तुम्हे आबाद कर दूँ...

संघर्ष शायद मेरा..
अब तब तक ही रहेगा ..
जब इस स्थिरता का आवास
मेरे मन मे बसेगा ..

शायद तब ही मै
उस से घबराउँगी नहीं..
और किसी भी कहर की ..
उम्मीद लगाऊँगी नही...

माँ ने कहा था..
मन की शांती से उपर कुछ नहीं..
और आज मै अंततः समझी ..
कि इसके अलावा कोई परम ध्येय नही...

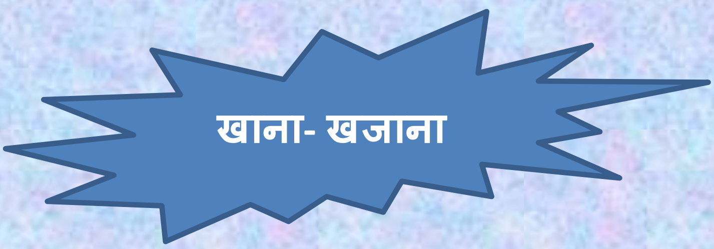

सुश्री चांदनी
प्रबंधक- एमएसएमई (मुउक्षेका)

चावल के आटे की लिट्टी

जैसा कि हम सब जानते हैं कि लिट्टी-चोखा बिहार की बहुत ही मशहूर रेसिपी है. यह गेहूँ के आटे से भी बनाई जाती है. हम इसे और एक नये तरीके से बनाएंगे. यह खाने में बहुत ही स्वादिष्ट है.

सामग्री : 4 कप चावल का आटा, 1 चम्मच शुद्ध घी, 100 ग्राम खसखस, 2 बडी लाल मिर्च, 2 कली लहसूण, 2 कप तेल (तलने के लिए), नमक स्वादानुसार.

भरावन के लिए : खसखस, लाल मिर्च, 2 कली लहसूण, नमक को बिलकुल थोडा सा पानी डालकर पीस लें. पेस्ट गाढी होनी चाहिए. फिर एक पैन में थोडा सा तेल डालकर पेस्ट को 2 मीनट के लिए भून लें.

विधि : सबसे पहले कढाई में पानी गरम कर लेंगे (2 कप), उबाल आने के बाद उसमें 1 चम्मच शुद्ध घी डालेंगे, फिर चावल का आटा डालकर अच्छे से 2 मिनट पका लेंगे. ठंडा होने पर उसे अच्छे से मुलायम होने तक मिलाकर गुंध लेंगे. अब चावल के आटे की छोटी लोई बनाकर उसमें भरावन भरकर हथेली से उसे थोडा सा दबाकर गोल आकार का बना ले. अब कढाई में तेल गर्म करके मध्यम आंच पर हलका गुलाबी होने तक तल लें. मीठी चटनी या धनिया की चटनी के साथ गरमा गरम परोसें.

सुश्री केशरी कुक्यान
सहायक प्रबंधक - मुंउक्षेका

शीरा (प्रसाद)

सामग्री : 1 ¼ कप रवा, 1 ¼ कप शक्कर, 1 ¼ कप शुद्ध घी, 1 ¼ केला (वेलची केला - छोटा केला जो पिले रंग का होता है), 1 ¼ कप दूध, 1 कप गरम पानी, काजू, बादाम, किशमिश, पिस्ता, इलायची पावडर, केशर

विधि : केशर को थोडे से गरम दूध में भिगो ले, थोडा सा घी बाजू में रखकर बचा हुआ घी कडाई में डालकर रवा डाले और काजू डालकर उस मिश्रण को थोडा पिंक होने तक भून लें. उसमें गरम पानी तथा दूध डालकर अच्छे से मिला लें. शक्कर डाल कर सभी ड्रायफ्रूट (बादाम, किशमिश, पिस्ता , इलायची पावडर) डाल दें. केले के तुकडे डालकर अच्छे से मिला लें. जो थोडा सा घी बाजू में रखा है उसे डाल दें. कडाई को दो मीनट तक ढक्कण लगाकर बंद रखें. प्रसाद का शीरा तैयार है.

कृषि ऋण मेला

दिनांक 20.01.2021 को क्षेत्रीय प्रबंधक श्री सुधांशु शेखर जी अध्यक्षता में वडकुन में मुंबई उपनगरीय क्षेत्रीय कार्यालय के अधीन वडकुन शाखा, धुंदलवाडी शाखा तथा गंजाड शाखा द्वारा कृषि ऋण मेला का आयोजन किया किया. जिसमें सुश्री रुचि गिरकर, शाखा प्रबंधक (धुंधलवाडी), सुश्री इशानी वेद, शाखा प्रबंधक (कोसबाड हिल्स), श्री महाबीर गुप्ता, शाखा प्रबंधक (वडकुन), श्री अमोल गायकवाड , शाखा प्रबंधक (गंजाड) तथा अन्य स्टाफ सदस्य भी उपस्थित थे.

महिला दिवस

दिनांक 08.03.2021 को महिला दिवस के अवसर पर मुंबई उपनगरीय क्षेत्रीय कार्यालय में क्षेत्रीय प्रबंधक श्री सुधांशु शेखर जी की अध्यक्षता में महिला दिवस बड़े उल्लासपूर्वक मनाया गया.

पुरस्कार

सोमवार, दिनांक 22.02.2021 को केन्द्रीय कार्यालय राजभाषा द्वारा डिजिटल रुप में 10वाँ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया. कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार डॉ. सुमीत जैरथ जी, आईएएस, हमारे बैंक के दिल्ली आंचलिक कार्यालय में उपस्थित थे. सम्मेलन की अध्यक्षता कॉर्पोरेट कार्यालय में बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री पल्लव महापात्र जी ने की. साथ में बैंक के कार्यपालक निदेशक श्री आलोक श्रीवास्तव जी तथा महाप्रबंधक राजभाषा, श्री स्मृति रंजन दाश, श्री एस. आर. खटीक, फील्ड महाप्रबंधक, मुंबई महानगर आंचलिक कार्यालय तथा डिजिटल रुप से देश के कोनेकोने से सभी फील्ड महाप्रबंधक, महाप्रबंधक, वरिष्ठ क्षेत्रीय प्रबंधक तथा क्षेत्रीय प्रबंधक उपस्थित थे.

इस अवसर पर उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु “ख” क्षेत्र में बैंक के मुम्बई अंचल को पुरस्कृत किया गया.

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India

प्रशस्ति-पत्र

वर्ष 2020 में भाषिक क्षेत्र "ख" में राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्य निष्पादन हेतु सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया के प्रबंधतंत्र द्वारा मुंबई महानगर आंचलिक कार्यालय को पुरस्कृत किया जाता है.

तदर्थ हम मुंबई महानगर आंचलिक कार्यालय के फील्ड महाप्रबंधक श्री एस. आर. खटीक की प्रशंसा करते हुए उनके कुशल नेतृत्व में कार्यरत मुंबई महानगर आंचलिक कार्यालय के राजभाषा परिवार के सदस्यों - श्री प्रदीप गोयल, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) - अंचल प्रभारी, सुश्री जयश्री पाठक, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा), सुश्री रंजना चौधरी, प्रबंधक (राजभाषा), सुश्री रेवती आलवे, सहायक प्रबंधक (राजभाषा) के योगदान की सराहना करते हैं.

पुनश्च: मुंबई महानगर आंचलिक कार्यालय को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाओं सहित यह प्रमाण-पत्र प्रदान किया जाता है.

मुंबई
22 फरवरी, 2021

पल्लव महापात्र
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी

पर्यावरण

श्री रोहित तिवारी
सहायक प्रबंधक
सीएफबी - मुंउक्षेका

प्रकृति के गोद में.......

प्रकृति की गोद में बैठा यह मेरा मन
कर रहा आलाप मेरा यह अन्तर्मन

हो अग्रसर वन-उपवन की ओर
क्यू दे रहा प्रलय निमंत्रण यह मानुष जन

कर पार सारी सीमाएँ तोड़ सारे ये बंधन
बन रहा घुसपैठिया क्यू यह मानुष जन

कहीं आग लगी है तो कहीं हिमपात
कहीं फट रही ज्वाला तो कहीं बह रहा सैलाब

निर्माण के नाम पर चल रहा विध्वंश का काम
है मानव छिनता इन मूक प्राणियों का संसार

होकर यह अविरत अगम कर रहा निरंतर प्रकृति दोहन
बुनकर यह अपने लिए जाल नित फँसता यह मानव जन

दे रहा चुनौती होकर यह मगन
बिओना किए अति का आँकलन

है समय अब भी ठहर जा, रोक अपने बढ़ते कदम
वरना ना बचेगा यह वन उपवन ना बचेगा यह मानुष जन ॥

“पर्यावरण” संपूर्ण जीव जगत का आधार है जो आदि काल से इसके उदभव एवं निरंतर विकास की प्रक्रिया में सहायक रहा है. क्या भविष्य का विकास भी इस पर निर्भर करता है? इसी वजह से मानव पर्यावरण का निरंतर उपयोग कर अपने विकास के पथ को प्रशस्त करना चाहता है. कई बार वह पर्यावरण के उपयोग का समायोजन करता है तो कई बार उसका शोषण एवं दोहन करता है. यह प्रक्रिया अनवरत ढंग से चलती आ रही है. किन्तु उसमें बाधाएँ उस समय आती है जब हम पर्यावरण के मूल तत्वों को नष्ट करने लगते हैं या उन्हें प्रदूषित करने लगते हैं. परिणामस्वरूप, पर्यावरण के घटक अपनी स्वाभाविक प्राकृतिक क्रिया करने में समर्थ नहीं रहते और परिस्थितिक संतुलन में बाधा उत्पन्न होती है. फलस्वरूप मानव को अनेक आपदाओं का सामना करना पड़ता है.

प्राकृतिक पर्यावरण की महत्ता आज अद्यतन समाज में स्वंय एक प्रशचिन्ह बनकर उभर रही है. अनवरत बढ़ती जन चेतना वायु व जल प्रदूषण, गैस दुष्प्रभाव, ओजोन परत की समस्या, कचरा व्यवस्थापन, जनसंख्या, विस्फोट एवं जंगलों के प्रमाण निरंतर कमी इत्यादि से जीवन की गुणवत्ता में निरंतर गिरावट दर्ज की गई है. आज न केवल मनुष्य अपितु जीव -जंतु, पशु-पक्षी एवं वनस्पति का भी अस्तित्व संकट में आ गया है. आज वैज्ञानिक

राजनितिज्ञ, अर्थशास्त्री, समाजशात्री सब पर्यावरण के संकट के प्रति चेतावनी दे रहे हैं. उनके अनुसार यह संकट और अधिक होता जाएगा. यहाँ तक की मानव सभ्यता को भी समाप्त कर देगा.

आज अगर एक नजर पर्यावरण संकट पर डाले तो स्पष्ट है कि विश्व की करीब एक चौथाई जमीन आज बंजर हो चुकी है और अगर यही रफ्तार रही तो सूखा प्रभावित क्षेत्र की करीब 70 प्रतिशत जमीन कुछ ही समय में बंजर हो जाएगी. यह खतरा इतना भयावह होगा कि इससे विश्व के लगभग 100 देशों में एक अरब से ज्यादा आबादी की जीवन संकट में पड़ जाएगा. हिम-शिखरों से आज विश्व की आधी आबादी को पीने लायक पानी प्राप्त होता है, पर ग्लोबल वार्मिंग की वजह से आज हिम शिखरों के पिघलने के प्रमाण में भारी वृद्धि देखने को मिली है जो एक संकट की तरफ इशारा करती है.

शहरी-करण के दबाव, बढ़ती जनसंख्या और तीव्र विकास की लालसा ने हमें हरियाली आवरण से वंचित कर दिया है. “संयुक्त राष्ट्र संघ” द्वारा जारी रिपोर्ट के अनुसार हर वर्ष धरती पर से एक प्रतिशत जंगल का सफाया किया जा रहा है. जो पिछले दशक से पचाश प्रतिशत अधिक है. जंगलों की कटाई सी समस्या आज विश्व के प्रमुख समस्या में से एक है. वनों की बेरहमी से हो रही कटाई के कारण एक तरफ ग्लोबल वार्मिंग बढ़ रही है, वहीं दूसरी ओर प्रकृति का संतुलन बिगड़ रहा है. कई जीव हमारी धरती से लुप्त हो चुके हैं. एक रिपोर्ट के अनुसार हिमालय क्षेत्र में हो रही तेजी से कटाई के कारण भू-क्षरण तेजी से हो रहा है. जिस वजह से कई बार मिट्टी का मलबा नदियों एवं झीलों में 500 से 1000 प्रतिशत तक भर जाता है. जिससे नदियों में जलभराव की भी समस्या उत्पन्न हो रही है. भारत की जीवन रेखा कही जाने वाली नदियाँ गर्मियों में सूख जाती है और इसी कारण से भी यही नदियों में बरिश के मौसम में बाढ़ आ जाती है.

पर्यावरण संकट का एक मुख्य कारण उच्च उपभोक्तावादी संस्कृति है. यह उपभोक्तावादी संस्कृति ऐसे प्रलोभनकारी उद्योग को विकसित करती है, जो कि सेवाओं व वस्तुओं से संबंधित अभिष्ट इच्छा की पूर्ति करता है. इस उपभोक्तावादी संस्कृति का मूल उद्देश्य इसमें नीहित होता है कि वह अधिक मात्रा में अपनी जैविक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु पर्यावरण संसाधनों का दोहन कर सके. वह इसे जन्मजात अधिकार के रुप में देखता है तथा भौगोलिक अध्येता भी इस दिशा में पर्यावरण व भविष्यवाद की द्वंद्वता को स्वीकार करते हैं क्योंकि व्यक्तियों की आर्थिक आत्मीयता प्राकृतिक उद्देश्यों को नकारती है.

पर्यावरण संकट का मुख्य प्रभाव लोगों के स्वास्थ्य पर पड़ा है. पर्यावरण संकट स्वस्थ जीवन शैली को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष तरीके से किसी न किसी रूप में प्रभावित करता है. विविध परिवर्तनों के चलते हमें खाद्य सुरक्षा व बीमारियों के निराकरण हेतु जिन कीटनाशक जैविक रसायन व तकनीक को प्रयुक्त किया जाता है. उसने किसी न किसी रूप में संकट को बढ़ाया ही है. विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार दुनिया भर में 40 प्रतिशत बीमारियाँ पर्यावरण के नष्ट होने से होती है. पानी व हवा से उपजी बीमारियाँ की वजह से प्रतिवर्ष लगभग 60 लाख लोगों की मृत्यु होती है.

पर्यावरण संकट का असर आज जल के संकट के रूप में भी देखने को मिल रहा है. आज औद्योगिक प्रदूषण, खनिज तेल व कचरे के बहिस्त्राव ने जल को सीधा प्रभावित किया है. इसके अतिरिक्त औद्योगिक विकास ने प्राकृतिक संसाधन के रूप में जल की मात्रा को दिनो-दिन कम किया है. धरती के संपूर्ण जल में स्वच्छ जल का प्रतिशत 0.3 से भी कम है. एक रिपोर्ट के अनुसार 2025 तक एक तिहाई देशों में रहने वाले विश्व के दो तिहाई आबादी पानी के विकट समस्या से जूझती नजर आएगी. इसके अतिरिक्त कृषि, मत्स्य, संसाधन, व्यापार इत्यादि अनेक क्षेत्र पर्यावरण संकट की भार झेलते हैं. पर्यावरण संकट से बचने के लिए आज पर्यावरण प्रबंधन की आवश्यकता है. पर्यावरणीय प्रबंधन से न केवल संसाधनों का युक्ति संगत उपयोग संभव हो पाएगा अपितु क्षेत्रीय आवश्यकताओं को पूर्ण करने तथा पर्यावरण की क्रियाओं में सामंजस्य भी स्थापित किया जा सकेगा और आवश्यकता होने पर उपभोग भी सीमित किया जा सकेगा. पर्यावरण प्रबंधन का मूल उद्देश्य प्राकृतिक संसाधनों का युक्ति संगत उपयोग, शारिरिक एवं मानसिक

स्वास्थ्य की सुरक्षा, आर्थिक मूल्यों को नई दिशा प्रदान करना तथा शुद्ध वातावरण प्रदान करना है. यह कार्य एकाकी अथवा एक संस्था का न होकर सामूहिक रूप से ही संभव है. इसमें प्रशासन, सामाजिक संस्थाओं और प्रत्येक व्यक्ति की भागीदारी आवश्यक है. पर्यावरण को शुद्ध रखने एवं उसके संकट से बचने के लिए निम्न पहलुओं पर प्रभावी होना पड़ेगा.

- पर्यावरण के विभिन्न घटकों को प्रदूषित होने से बचाना.
- विलुप्त होती प्रजातियों का संरक्षण
- विभिन्न सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाओं में पर्यावरण प्रबंधन हेतु समन्वय करना
- विकास योजनाओं का पर्यावरणीय प्रभाव के दृष्टिकोण से विश्लेषण करना.
- पर्यावरण की गुनवत्ता बनाए रखने के लिए निरंतर पुनरीक्षण हेतु व्यवस्था करना.
- पर्यावरण संरक्षण एवं प्रबंधन हेतु पर्याप्त मानवीय एवं संस्थागत साधनों को जुटाना.
- पर्यावरण संबंधी चेतना जागृत करना तथा पर्यावरण शिक्षा की व्यवस्था करना.
- प्रबंधन हेतु किए गए उपायों के परिणाम की सतत जाँच एवं सुधार करना.
- पर्यावरण नियिजन हेतु प्रारूप तैयार करना.
- पर्यावरण के विविध पक्षों पर शोध कार्य कर उसे आकर्षित होने से बचाना इत्यादि.

पर्यावरण प्रबंधन के अंतर्गत यद्यपि संपूर्ण पर्यावरण को दृष्टिगत रखा जाता है किन्तु कुछ परिस्थितिक तंत्र को नियंत्रित करते हैं तथा जिनका प्रत्यक्ष रूप से मानव जीवन पर प्रभाव पड़ता है.

वर्तमान समय में जरुरत है इस पर्यावरण संकट को समाप्त करने की ताकि भविष्य सुरक्षित हो सके व मानवीय अस्मिता दीर्घायमान हो सके. इस हेतु कुछ आम सहमति जन्य दृष्टि है कि प्रथम औद्योगिक कृषि को कम करना होगा, क्योंकि यह तो सत्य है कि यह कम लागत में खाद्य उत्पादन को बढाता है लेकिन लम्बे समय बाद पृथ्वी की क्षमता को कम करता है. इसके अन्तर्गत व्यक्ति उच्च प्रौद्योगिकी के माध्यम से खतरनाक रसायनों को प्रयुक्त करता है जो स्वास्थ्य व पर्यावरण के लिए संकट उत्पन्न करती है. बड़े बाँध पर्यावरण हेतु घोर संकट पैदा करते हैं क्योंकि यह कृषि योग्य भूमि, जंगल व देशज लोगों की संस्कृतिक आर्थिक परिस्थिति का विनाश करता है तथा इसमें उत्पन्न असंतुलन एक भयावह संकट को जन्म देता है. इसके अलावा जनसंख्या विस्थापन को भी रोकना होगा क्योंकि अपने परम्परागत गृह से विस्थापित लोग तकनीकी समस्याएँ तो उत्पन्न करते हैं साथ ही, विविध असांजस्यपूर्ण कार्यों से पर्यावरण को क्षति पहुँचाते है. विषैली पदार्थों व रेडियोधर्मी कचरे के

बढते बाजार को रोकना होगा क्योंकि यह पर्यावरण को प्रदूषित करते हैं. झूम कृषि पर नियंत्रण स्थापित करना होगा व वनों के काटने वालों को कठोर दंड तथा वृक्षारोपण के कार्यक्रम को अनवरत जारी रखना होगा. इसके अलावा निर्धनता व बेरोजगारी के विरुद्ध बढते दुश्चक्र को कम करना पड़ेगा. प्रौद्योगिकी उच्चता के स्तर की हासिल करना होगा जो पर्यावरण संरक्षण को ध्यान में रखती हो.

आज पर्यावरण का संतुलन पूरी तरह से असंतुलित हो चुका है जिसे सुधारने के लिए हर तबके के व्यक्ति को अपनी भगिदारी इसमें सुनिश्चित करनी होगी. एक जिम्मेदार बैंक कर्मचारी होने के नाते यह हमारा भी दायित्व है कि पर्यावरण संरक्षण में हम भी अपना योगदान दें. जिसके लिए हम विविध प्रयास शाखा स्तर पर कर सकते हैं -

- ग्राहकों को अधिक प्रमाण में ग्रीन बैंकिंग की तरफ ले जाना. जिसके लिए हम विविध डिजिटल माध्यमों का उपयोग कर सकते हैं.
- शाखा में कागज का कम से कम इस्तेमाल हो यह सुनिश्चित करना.
- रोजमर्रा के ग्राहकों की विविध आवशकताएँ जैसे उनके खातों का विवरण कागज पर प्रिंट देने की जगह उन्हे ई-स्टेटमेंट के माध्यम से सॉफ्ट कॉपी उपलब्ध कराएं.
- डिजिटल माध्यमों का उपयोग करके निधि अंतरण करने हेतु प्रेरित करना, जिससे कागज का उपयोग टाला जा सके.
- बिजली से संचालित होने वाले यंत्रों का संयम से इस्तेमाल करना. बिजली का फिजूल उपयोग न करके हम पर्यावरण संरक्षण में अपनी भागीदारी निभा सकते हैं.
- संभव हो तो स्थानिक नियमों के अनुसार अनुमति हो उतने ही कर्मचारी अलग-अलग वाहनों की अपेक्षा संयुक्त रुप से वाहन से आवागमन करके इंधन बचाकर पर्यावरण संरक्षण में योगदान दे सकते हैं.

आज पर्यावरणीय संकट जटिल हो गया है, जिसके लिए कई समाधानों की आवश्यकता है. पर्यावरण की सुरक्षा में सरकार के साथ-साथ हर एक व्यक्ति की भागीदारी सुनिश्चित होनी चाहिए. आज संपूर्ण वैश्विक समुदाय द्वारा संसाधनों के पुन:वितरण की आवश्यकता है. मनुष्य और प्रकृति की अंतर-निर्भरता पर जोर देकर पर्यावरण सुरक्षा एवं संवर्धन के लिए हम सबकी व्यक्तिगत स्तर पर हर संभव प्रयास के लिए प्रतिबद्ध होना पड़ेगा.

प्रकृति का न करे हरण,
आओ मिलकर बचाएँ पर्यावरण ।

कहानी

बगुला और कछुआ

नदी किनारे एक विशाल पेड़ था. उस पेड़ पर बगुलों का बहुत बडा झुंड रहता था. उसी पेड़ के कोटर में काला नाग रहता था. बगुलों ने दिए हुए अंडों से बच्चे निकल आते और जब वह कुछ बड़े होकर मां-बाप से दूर रहने लगते, तभी वह नाग उन्हें खा जाता था. इस प्रकार वर्षो से काला नाग बगुलों के बच्चे हड़पता आ रहा था. बगुले भी वहां से जाने का नाम नहीं लेते थे, क्योंकि वहां नदी में कछुओं की भरमार थी. कछुओं का नरम मांस बगुलों को बहुत अच्छा लगता था. इस बार नाग जब एक बच्चे को हड़पने लगा तो पिता बगुले की नजर उस पर पड़ गई. बगुले को पता लग गया कि उसके पहले बच्चों को भी वह नाग खाता रहा होगा. उसे बहुत शोक हुआ. उसे आंसू बहाते एक कछुए ने देखा और पूछा “मामा, क्यों रो रहे हो?”

अगर किसी को गम है तो वह हर किसी के आगे अपना दुखड़ा रोने लगता हैं. उसने कछुए को नाग और अपने मृत बच्चों के बारे में बताकर कहा कि “मैं उससे (नाग) बदला लेना चाहता हूं.”

कछुए ने मन में सोचा “अच्छा तो इस गम में बगुला मामा रो रहा है. लेकिन जब बगुला हमारे बच्चे खा जाता हैं तब तो कुछ ख्याल नहीं आता कि हमें कितना गम होता होगा. अगर तुम सांप से बदला लेना चाहते हो, तो हम भी तो तुमसे बदला लेना चाहेंगे.”

बगुला अपने शत्रु को अपना दुख बताकर गलती कर बैठा था. चतुर कछुआ एक तीर से दो शिकार मारने की योजना सोच चुका था. वह बोला “मामा ! मैं तुम्हें बदला लेने का बहुत अच्छा उपाय सुझाता हूं.”

बगुले ने अधीर स्वर में पूछा “जल्दी बताओ वह उपाय क्या है. मैं तुम्हारा एहसान जीवन भर नहीं भूलूंगा.’ कछुआ मन ही मन मुस्कुराया और उपाय बताने लगा “यहां से कुछ दूर एक नेवले का बिल है. नेवला सांप का घोर शत्रु है. नेवले को मछलिया बहुत प्रिय होती हैं. तुम छोटी-छोटी मछलियां पकड़कर नेवले के बिल से सांप के कोटर तक बिछा दो, नेवला मछलियां खाता-खाता सांप तक पहुंच जाएगा और उसे समाप्त कर देगा.’ बगुला बोला “तुम जरा मुझे उस नेवले का बिल दिखा दो.’

कछुए ने बगुले को नेवले का बिल दिखा दिया. बगुले ने वैसा ही किया जैसे कछुए ने समझाया था. नेवला सचमुच मछलियां खाता हुआ कोटर तक पहुंचा. नेवले को देखते ही नाग ने फुंकार छोड़ी. कुछ ही देर की लड़ाई में नेवले ने सांप के टुकड़े-टुकड़े कर दिए. बगुला खुशी से उछल पड़ा. कछुए ने मन ही मन में कहा “यह तो शुरुआत है मूर्ख बगुले. अब मेरा बदला शुरु होगा और तुम सब बगुलों का नाश होगा.”

कछुए का सोचना सही निकला. नेवला नाग को मारने के बाद वहां से नहीं गया. उसे अपने चारों ओर बगुले नजर आए, जो उसके लिए महिनों के लिए स्वादिष्ट खाना थे. नेवला उसी कोटर में बस गया, जिसमें नाग रहता था और रोज एक बगुले को अपना शिकार बनाने लगा. इस प्रकार एक-एक करके सारे बगुले मारे गए.

मुंबई महानगर आंचलिक कार्यालय के तत्वाधान में दिनांक 06.03.2021 को एसएमआरओ, एमएसआरओ, टीआरओ सहित एक संयुक्त हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया. जिसमें 32 कर्मचारियों को हिन्दी प्रशिक्षण दिया गया.

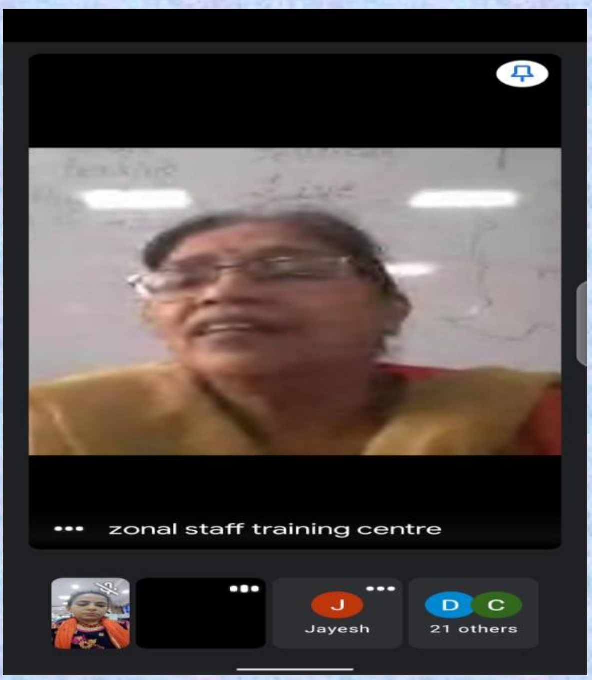

संस्मरण

सुश्री रोहिणी करंबे
सहायक प्रबंधक - वसूली, मुउक्षेका

मेरी एक सहेली है उसका नाम रेणूका है. हमारी दोस्ती मुंबई के लोकल ट्रेन में दफ्तर जाते समय हुई थी. हमारी दोस्ती समयानुसार गहरी हो गई. रेणूका ने शादी नहीं की थी उसकी दो वजह थी एक तो उसकी माँ 70 साल की थी और उसका भाई जिसकी उम्र 30 साल की थी वह नौकरी करता था परंतु पांव से विकलांग था. रेणूका के माँ को हमेशा अपने दोनो बच्चों की चिंता लगी रहती थी. वह सोचती थी कि उसके बच्चों की शादी कब होगी. रेणूका सोचती थी कि अगर वह शादी कर लेगी तो माँ और भाई की देखभाल कौन करेगा?

रेणूका ने सोचा की अगर भाई की शादी कर दूँगी तो अच्छा रहेगा, उसने अपने भाई के लिए लड़की ढूढना शुरु कर दिया. लेकिन भाई का रंग सावला तथा वह विकलांग होने की वजह से उसे कोई लड़की पसंद नहीं कर रही थी. तब रेणूका ने सोचा क्यूँ न ऐसी लडकी ढूँढू जिसके माँ -बाप न हो और जो अनाथाश्रम में पले-बढी हो. उसे एक अनाथाश्रम में ऐसी एक लड़की मिली जो अनाथ थी साथ ही विकलांग भी थी.

एक दिन मेरे मोबाइल पर रेणूका का मेसेज आया जिसमें उसने अपने भाई के शादी का न्योता भेजा था और लिखा था कि भाई के शादी में जरुर आना और शादी अनाथाश्रम के आंगण में है. मै शादी में शामिल होने अनाथाश्रम पहुँच गई. वहाँ मैने देखा कि सब छोटे-छोटे बच्चे थे. जो शादी के माहौल में बहुत खुश दिखाई दे रहे थे. सभी बच्चे अच्छे पुराने कपडे पहने हुए थे. शादी की कोई झगमगाट नहीं थी. बच्चों में अपने हाथों से बनाई पेंटिंग और फुल माला से मंडप को सजाया था. वहाँ न तो कोई कुर्सी न ही टेबल था. सभी बच्चे जमीन पर बैठकर शादी का आनंद उठा रहे थे. खाने ने केवल दाल-चावल और जलेबी थी, जो सभी बड़े चाव से खा रहे थे. ऐसी सादगी भरी शादी मैने कभी देखी नहीं थी. अब मुझे पता चला की कितना बेकार का खर्चा अमीर लोग शादी में खर्च करते हैं. जिसकी कोई जरुरत नहीं होती है.

शाम को जब बिदाई का समय आया तो अनाथाश्रम के सभी बच्चे और सभी लोग दुल्हन को घेर कर फुटफुट कर रोने लगे. यह देख मुझे भी रोना आ गया. एक दूसरे से कोई भी रिश्ता होने पर भी यह लोग एक परिवार के जैसा रहते हैं. कितना अपनापन है इन लोगों में. यह रिश्ते तो खून के रिश्ते से भी बड़े दिखाई दे रहे थे. हम लोग हमेशा बड़े झगमगाट वाले शादी में शामिल होते हैं पर ऐसी अनाथाश्रम वाली शादी सचमुच बहुत अनोखी है.

दिनांक 28.02.2021 पर आधारित

मुंबई उपनगरीय क्षेत्रीय कार्यालय : एक नजर कुल शाखाएँ : 39		
महानगरीय	अर्द्ध - शहरी	ग्रामीण
34	01	04

व्यवसाय एक नजर में		
चालू जमा	बचत जमा	कासा जमा
420.43	3377.20	3797.62

कुल अग्रिम			
रिटेल	एमएसएमई	कृषि	एनपीए
908.04	370.73	14.34	143.40

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India

1911 से आपके लिए "केंद्रित" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

NETC NATIONAL ELECTRONIC TOLL COLLECTION | FASTag Easy to Cruise

निर्बाध गति के लिए
सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया फास्टेग

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया की नजदीकी शाखा में आकर फास्टेग का आवेदन कीजिये

अथवा

बैंक की वेबसाइट (centralbankofindia.co.in)
इंटरनेट बैंकिंग वेबसाइट (प्री लॉगइन) (www.centralbank.net.in)
सेन्ट मोबाइल एप (प्री लॉगिन) में दिये गए लिंक
Apply for FASTag पर क्लिक करें.

टोल भुगतान के लिए नकदी रहित, अत्यधिक सुरक्षित एवं सुविधाजनक

आज टोल प्लाज़ा से निकलें और अगले दिन (टी+1) भुगतान करें

अपने खाते को NETC FASTag से जोड़ें और निश्चित हो जायें

मुख्य आकर्षण

- ऑटो टॉपअप सुविधा
- धारित राशि पर ब्याज अर्जित करें
- अलग से राशि रखने की जरूरत नहीं
- राशि अगले दिन (टी+1) में नामे होगी